

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

२२/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते। परमात्मा गुरुजी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाए... हर कोई अपना मूलस्वरूप देखें... अपने मूलस्वरूप का अनुभव कीजिए... अपने मूलस्वरूप अवस्था का गहराई से अनुभव कीजिए... मैं आत्मा चमकता सितारा ब्रेन के अंदर हाइपोथैलेमस और पिट्यूटरी ग्लैंड के बीच में मुझ आत्मा का सिंहासन है... उस सिंहासन पर मैं आत्मा मेरे मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हूं... सभी अनुभव कीजिए... अभी से दस सेकेंड के लिए सभी अनुभव कीजिए... सभी स्पष्टता से अपने मूलस्वरूप को देखिए... देखिए उससे लाइट और माइट निकल रही है...

आपके सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों को चलने के लिए जो ऊर्जा लगती है वह इस ही मूलस्वरूप से मिलती है। सभी आत्माओं को अपने मूलस्वरूप स्थिति में बैठने का पुरुषार्थ कम से कम एक घड़ी से शुरू करना होगा। जितना जितना आप बैठकर इस मूलस्वरूप अवस्था का अभ्यास करेंगे, उतनी वह अवस्था और पक्की होती जाएगी और यह मूलस्वरूप स्थिति बहुत सहज रूप से आपके कर्मों में उतरती जाएगी।

कभी भी किसी को अपने अंदर कुछ बदलाव करना होता है, तो सबसे पहले अपने अंदर मन ही मन वह विचार चलते हैं कि मेरे अंदर यह गुण आ जाए, मेरा व्यवहार इस प्रकार हो जाए, अब तक वह गुण बाहरी रूप से आपके कर्मेन्द्रियों के द्वारा घटित नहीं हुए हैं, किन्तु वह सभी विचार सूक्ष्म रूप में आपके मन के अंदर ही चल रहे हैं। जो कुछ भी आप बाहर परिवर्तन चाहते हो वह परिवर्तन आने के लिए सबसे पहले सूक्ष्म रूप में उसके ऊपर काम करना होता है, पहले सूक्ष्म रूप में काम किया जाता है, विचारों के रूप में संकल्पों के रूप में। जैसे जैसे संकल्प के रूप में या शुद्ध विचारों के रूप में सूक्ष्म लेवल पर आप

आपके अंदर जो बदलाव करना चाहते हो उसका विचार या संकल्प उठते जाते हैं वह ऊर्जा जो आप आत्मा से उठती है, निकलती है, विचारों के रूप में या संकल्पों के रूप में, वही ऊर्जा स्थूलता में आपके अंदर वह बदलाव के रूप में काम करती है। इसलिए सारा खेल पहले सूक्ष्म का है, फिर स्थूलता में उसका परिणाम दिखता है।

आप आपके बाहरी कर्मों को ठीक करने की कोशिश नहीं करना, क्योंकि परिवर्तन सूक्ष्म से स्थूलता में आता है, यही प्रोसेस है। क्योंकि अंदर जिस प्रकार के विचार, संकल्प, विज्ञान चलते हैं, उस ही प्रकार से बाहर कर्मेन्द्रियों के द्वारा वह व्यवहार में आते हैं, आपके स्वभाव संस्कार में उतरते हैं। इसलिए सबसे पहले अपनी सूक्ष्मता को पहचानो। अगर आप चाहते हो कि आपके अंदर किसी भी प्रकार का विपरीत गुण निकल जाए तो सबसे पहले उस ही विपरीत गुण का जो सद्गुण है, उस सद्गुण को आपको संकल्पों में, विचारों में और विज्ञान में लाना होगा। अगर आप चाहते हो कि आपका व्यवहार शांतपूर्वक स्थिति में सभी के साथ सदा रहे। तो उसके लिए पहले आपको, आपकी बुद्धि से, आपका शांत स्वरूप अवस्था को आपको देखना होगा। आपके विचारों में, आपके संकल्प और आपके विज्ञान, उसी का निर्माण करें कि जो आप चाहते हो कि आप कैसे सभी के साथ शांति से व्यवहार कर रहे हैं यह आपको अंदर देखना पड़ेगा। यह एक इमेजिनेशन है, पर यह इमेजिनेशन सिर्फ इमेजिनेशन नहीं रहता यह इमेजिनेशन सूक्ष्मता की रियलिटी है। जितना जितना आप आपको इमेजिनेशन में देखते जाएंगे वही सूक्ष्मता जो सूक्ष्म लेवल पर रियलिटी है वही कुछ समय के बाद स्थूलता में आएगी स्थूलता में दिखेगी। जैसे कभी किसी को अपना घर बनाना होता है, तो सबसे पहले उसके विचार चलते हैं, उसको संकल्प उठते हैं, और उस प्रकार के वो विज्ञान में अपने घर को देखता है, सबसे पहले सूक्ष्मता में यह सारी प्रोसेस घटित होने के बाद फिर कागज़ पर वह घर का नक्शा आता है। फिर उसकी प्लानिंग स्थूलता में होने लगती है और कुछ समय के बाद वह घर स्थूलता में बन जाता है। उस ही प्रकार आपको आपके अंदर जो जो बदलाव करना चाहते हो वह सभी बदलाव को सबसे पहले आपको आपके विज्ञान में लाना होगा उसके लिए उस प्रकार के विचार चलाने होंगे, संकल्प रचने होंगे। क्योंकि आप ही आपके रचयिता हो,

जो आप भविष्य में बनने वाले हो। परमात्मा ने हर किसी के पास अपनी भविष्य की रचना रचने की कलम दी है, हर कोई अपना भविष्य वर्तमान में लिख सकता है। ऐसे नहीं है कि कोई ऊपर बैठ आपका आने वाला भविष्य लिख रहा है, आप ही आपके रचयिता हो। इसलिए आपका यहाँ पर चलने वाला हर विचार, हर संकल्प, हर विज्ञान, स्थूलता में आता ही आता है। फिर वह आपने कॉन्ससियसली उठाया हुआ हो या अनकॉन्ससियसली उठाया हुआ हो या बुद्धि द्वारा सबकॉन्ससियसली उठाया हुआ हो क्योंकि संकल्प, विचार, विज्ञान यह सब एक ऊर्जा है। एक बार इनका निर्माण हो गया, वह ऊर्जा कहां जाएगी? वह ऊर्जा नष्ट नहीं हो सकती, वह ऊर्जा स्थूलता में अपना आकार लेगी, स्वरूप लेगी। फिर कभी कभी कोई कहते हैं, हमने तो ऐसे ही सोचा था, बरोबर वैसे ही हुआ। कभी कभी कोई कहते थे, हमने तो यह ऐसे ही सोचा था, इसके पीछे कोई इंटेंशन नहीं था, पर फिर भी यह ऐसे कैसे हुआ? हमने तो मजाक में बोला था, हमने तो मजाक में सोचा था, फिर यह तुरंत ऐसे कैसे घटित हुआ? आपका हर विचार, हर संकल्प, हर बोल, हर विज्ञान स्थूलता में आता ही आता है। फिर चाहे वह तुरंत आये या कुछ समय के बाद आये। यह उस पर निर्भर होता है। कितनी इंटेंसिटी से आपने सोच चलाई, संकल्प उठाए, विज्ञान देखे, जितनी आपकी तीव्र इंटेंसिटी होगी, उतने शीघ्र ही वह सारा साकार जगत में, स्थूलता में घटित होता है, पर वह जरूर घटित होगा, अभी नहीं तो और कुछ समय के बाद उसको घटित होना ही है क्योंकि ऊर्जा का निर्माण हो चुका है। इसलिए सभी सदैव अपने विचारों का, संकल्पों का, विज्ञान का, बोल का सदा ध्यान रखें। क्योंकि यह मन बुद्धि संस्कार क्रिएशन की ऊर्जाएं इनके द्वारा निर्मित होती है आत्मा से, इसलिए कुछ भी सोच कर नहीं चलेगा, कैसे भी संकल्प उठा कर नहीं चलेगा, कैसे भी विज्ञान देख कर नहीं चलेगा। आप जो आपके लिए सोचते हो, संकल्प रचते हो, या कुछ देखते हो, या आपके प्रति कुछ बोलते हो, वह सब कुछ आपके लिए अवश्य घटित होता ही है। उसी प्रकार अगर आपने किसी और के प्रति विचार चलाए, संकल्प चलाए, विज्ञान में देखा, या किसी के प्रति आपने कुछ बुरा भला बोला, तो वह सब कुछ उसके प्रति ना होकर वो आप ही के प्रति होगा, क्योंकि यह लॉ है। आप आपके लिए अच्छा बोलो या बुरा बोलो वह आप ही के साथ घटित होता है। वैसे ही आप दूसरों के प्रति भी अच्छा बोलो,

सोचो, देखो या संकल्प उठाओ। या दूसरों के प्रति बुरा बोलो, सोचो, देखो या संकल्प उठाओ। वह दूसरों के प्रति जो भी आप निर्माण करते हो वह भी आप ही के साथ घटित होता है, क्योंकि आपने ऊर्जा निर्माण की है वह आप ही के लिए लगेगी। इसलिए सदैव अपने हर संकल्पों का, हर विचार का, हर विज्ञान का, हर बोल का ध्यान रखना। ऐसे ना हो कि जिन्दगी भर बुरे विचार, बुरे संकल्प, बुरे बोल में ही बिताएं, और जब समझ आयी, तब आत्मा के पास शक्ति ही नहीं रही, अच्छे संकल्पों को निर्माण करने की अच्छे विचारों को सोचने की, अच्छे विज्ञान को देखने की, या अच्छे बोल बोलने की। इसलिए आप आत्मा की शक्ति आपको कहां लगानी है, यह आप ही को सोचना होगा वह शक्ति समर्थ काम में लगानी है, या उसको व्यर्थ करना है। अंत में हर किसी के पास अपना चार्ट पहुँच जाएगा। इस जन्म में आपने आप आत्मा की ऊर्जा कहां कहां नष्ट की और कहां कहां समर्थ कर्मों में लगायी और हर किसी का हिसाब किताब होकर रहेगा। पर उस समय आत्मा कुछ नहीं कर सकती सिवाय भुगतने के।

इसलिए सभी सबसे पहले अपने सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों को ध्यान देते हुए उनसे जो भी निर्माण करना है उसका ध्यान रखें। अभी के आप जो हो वह बहुत काल के आपके विचार, संकल्प, विज्ञान, बोल, वृत्ति, भाव इन सब के कारण अभी की आपकी पूर्ण पर्सनालिटी है, इसके लिए कभी भी किसी को जिम्मेवार नहीं ठहराना। अभी आपके शरीर में जो भी बीमारियां हो, तकलीफें हो, दुख दर्द हो, उन सभी की जिम्मेवारी भी आप ही की है, आप ही की निर्माण की हुई ऊर्जा से, आपके शरीर में कष्ट है, दुख है, और आप ही की ऊर्जा के कारण, आपका शरीर स्वस्थ है, इसलिए कभी भी, किसी की भी, कोई कम्प्लेन नहीं करना। आप स्वयं आपका ब्रह्मांड हो और उसके लिए संपूर्ण रूप से आप ही जिम्मेवार हो।

परमात्मा ज्ञान की समझ हर किसी को सदा देते हैं पर उस समझ को लेकर हर किसी को अपने अंदर परिवर्तन करना होगा। टू लेट के बाद कभी कोई बदल नहीं सकता, यह लॉ ही नहीं है। इसलिए हर कोई संभल जाए, आपके पास कितना समय है वह आपको भी पता नहीं है। इसलिए हर सेकंड को समर्थ कामों में लगाना, अपने सभी सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों द्वारा, अपनी परिवर्तन की ऊर्जा को परिवर्तन के कार्य में लगाना। हर कोई अपने से चेक करे, अब तक की यात्रा में मुझ आत्मा ने, कितना समय और मुझ

आत्मा की ऊर्जा को व्यर्थ गंवाया है या कितना समय और आत्मा की ऊर्जा को समर्थ में लगाया है। हर कोई आज के दिन में अपनी इस जन्म की पूरी यात्रा को चेक करें।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः